दैनिक भास्कर

भोपाल फ्रंट पेज

भोपाल, बुधवार 27 अप्रैल, 2022

जनता के पैसों की बर्बादी • एसटीपी का ट्रीटेड वॉटर सी श्रेणी के पानी से भी 3 गुना ज्यादा खराब

350 करोड़ के 9 एसटीपी का 'ट्रीटेड' वॉटर दूषित, अब सुधारने के लिए 20 करोड़ और खर्च करने होंगे

इसीलिए... निगम को ट्रीटेड वॉटर नदी-तालाब में छोड़ने की इजाजत नहीं दे रहा पीसीबी

मनोज जोशी

अमृत प्रोजेक्ट में 350 करोड़ रुपए खर्च करके बने 9 एसटीपी का ट्रीटेड वॉटर इस्तेमाल करने लायक भी नहीं है। हमारे तालाबों व कलियासोत नदी में पानी का इतना फ्लो नहीं है कि यह गंदगी डायल्यूट हो जाए और इसे इस्तेमाल करने लायक बनाया जा सके। यानी, इतना रुपए खर्च करने के बावजूद बड़ा तालाब, छोटा तालाब, शाहपुरा तालाब व कलियासोत नदी का पानी साफ नहीं होने वाला है। यही वजह है कि पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड (पीसीबी) नगर निगम को इन एसटीपी से निकल रहे 10 करोड़ लीटर ट्रीटेड वॉटर को वापस नदी-तालाब में छोड़ने की अनुमति नहीं दे रहा है। यदि पीसीबी की शर्तें को मानकर तकनीकी सुधार किए जाएं तो इस पर 20 करोड़ और खर्च होंगे। तकनीकी रूप से जिस जलस्रोत में बायोकेमिकल ऑक्सीजन डिमांड (बीओडी) 3 या इससे ज्यादा होती है, उसे सी श्रेणी का माना जाता है, यानी इस पानी को इस्तेमाल के लायक भी नहीं माना जाता। एसटीपी से ट्रीटेड वॉटर की बीओडी 10 है। यदि यह ट्रीटेड वॉटर लगातार जलस्रोत में मिलता रहा तो पहले से प्रदूषित हमारे नदी-तालाब की सेहत और खराब हो जाएगी। यदि जलस्रोत में पानी की मात्रा ज्यादा हो तो यह गंदगी डायल्यूट हो सकती है। प्रदेश में यह स्थिति सिर्फ नर्मदा नदी में है। बारिश में सभी जलस्रोत में यह डिस्चार्ज छोड़ने की अनुमति दी जा सकती है, क्योंकि उस समय ताजे पानी का फ्लो ज्यादा होता है।

एसटीपी बनने के पहले तक जो सीवेज सीधा नदी व तालाब में मिल रहा था, उसकी बीओडी तो 300 तक होती थी। भोज वेटलैंड के तहत बने प्राइमरी ट्रीटमेंट वाले प्लांट में भी बीओडी 20 से ज्यादा होती है, लेकिन यदि यह पानी इन जलस्रोतों को नहीं मिला तो ये सूख भी सकते हैं।

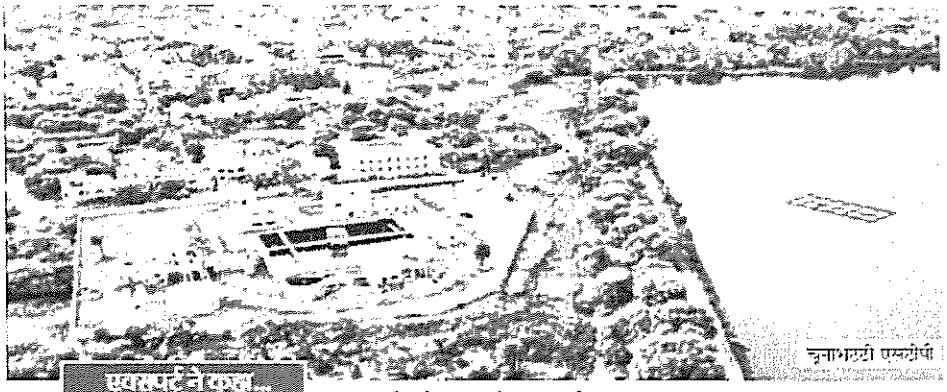

• यदि ... • बिना ...

चूनाभट्टी एसटीपी

एक्सपर्ट ने कहा...

प्रोजेक्ट कॉस्ट का 5-7% और खर्चा नहीं किया तो बर्बाद हो जाएंगे 350 करोड़

सीवेज का ट्रीटमेंट 3 स्तर पर होता है। प्राइमरी, सेकंडरी व टर्शरी। टर्शरी में तो सीवेज के पानी को पीने योग्य बनाया जा सकता है, लेकिन यह बहुत महंगा पड़ सकता है। जिन देशों में पानी बहुत कम है, वहां इस तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है। प्रोजेक्ट अमृत के तहत भोपाल में जो एसटीपी डिजाइन हुए, वे सेकंडरी ट्रीटमेंट के अनुसार हुए हैं। इसमें सीवेज इतना ट्रीट हो सकता है कि उसे बड़े जलस्रोत में मिला सकते हैं, लेकिन नगर निगम भोपाल को डिजाइन और उसके एक्जीक्यूशन में क्या अंतर रह गया, उसका अध्ययन करके कुछ सुधार व बदलाव कर इसे ठीक किया जा सकता है। इस पर प्रोजेक्ट कॉस्ट का 5-7% खर्चा और बढ़ जाएगा, पर यह नहीं किया तो 350 करोड़ बर्बाद हो जाएंगे। **-असिस्टेंट प्रोफेसर गौरव वैद्य,** अर्बन इंजीनियरिंग विभाग, मैनिट

ट्रीटमेंट सुधारें या पानी का कहीं और इस्तेमाल करें-

मप्र पीसीबी में सुपरिटेंडेंट इंजीनियर ब्रजेश पटेल ने कहा कि निगम ने एसटीपी ऐसे डिजाइन किए हैं कि उनमें ट्रीटेड वॉटर की बीओडी 20 रहेगी। वे प्लांट में फिल्टर की क्षमता बढ़ाने व ट्रीटमेंट में थोड़ा सुधार करके इसे 3 तक ला सकते हैं। या तो वह सुधार करें या पानी कहीं और यूज करें।

20 अप्रैल को प्रकाशित खबर

केवल दस फीसदी सीवेज आ रहा एसटीपी में, ट्रीटमेंट की गारंटी नहीं

एक्सपर्ट्स के अनुसार सीवेज के घरेलू कनेक्शन नहीं होने से अभी एसटीपी में उसकी क्षमता का 10% सीवेज ही पहुंच रहा है। एसटीपी का सिस्टम इस तरह डिजाइन होता है कि वह अपनी कुल क्षमता के 75% से 125% तक बेहतर काम कर सकता है।

अनुमति के बाद ही बने हैं एसटीपी, हम उच्च स्तर पर अपील करेंगे

• प्रोजेक्ट अमृत की डीपीआर से लेकर एसटीपी की टेक्नोलॉजी तक सबकी हर स्तर पर अनुमति ली गई है। एसटीपी निर्माण से पहले भी पीसीबी की अनुमति ली गई है। अब वे ही एसटीपी का पानी डिस्चार्ज करने की अनुमति नहीं दे रहे हैं। हम इस विषय पर उच्च स्तर पर अपील करेंगे। तकनीकी सुधार से कभी भी इनकार नहीं है, लेकिन उसका कारण वाजिब होना चाहिए। **-वीएस चौधरी कोलसानी,** कमिश्नर, नगर निगम